Subject – Sociology
Topic – Society
Study Material for – MDC, SEMESTER-I

समाज की अवधारणा
Concept of Society

प्रसिद्ध समाजशास्त्री मेकाइवर एवं पेज द्वारा समाज को सामाजिक संबंधों के परिवर्तनशील प्रतिरूप के रूप में परिभाषित किया गया है।

सामाजिक संबंध से तात्पर्य, व्यक्तियों के मध्य ऐसे संबंध से है जो पारस्परिक जागरूकता द्वारा निर्धारित होते हैं; उदाहरण के लिए, मतदाता का प्रत्याशी से, कर्मचारी का नियोक्ता से, माता का उसकी संतान से संबंध आदि। पूर्व वर्णित सभी संबंधों में, सम्मिलित पक्ष, मात्र एक-दूसरे से प्रभावित ही नहीं होते अपितु संबंधित प्रभाव के प्रति जागरूक भी होते हैं व यह जागरूकता उनके पारस्परिक व्यवहारों को निर्धारित भी करती है।

साथ-ही, दो सेनाओं के मध्य युद्ध ~~जैसी~~ जैसे पूर्ण शत्रुता वाले संबंधों को छोड़ अधिकांश सामाजिक संबंध, सामुदायिक भावना या पारस्परिक

जुड़ाव की भावना से युक्त होते हैं; पारस्परिक जुड़ाव की भावना, समाज के अस्तित्व के लिए अनिवार्य शर्त है।
इस प्रकार, सामाजिक संबंध ऐसे संबंध हैं, जो व्यक्तियों की पारस्परिक जागरूकता व पारस्परिक जुड़ाव की भावना पर आधारित होते हैं।

मनुष्य के लिए समाज का महत्व

अरस्तू के अनुसार " मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।"
मनुष्य के लिए समाज के महत्व को निम्नांकित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है -

1. सामाजिक सम्पर्क से पूर्ण वंचित अपवादस्वरूप पाये जाने वाले बच्चों (भेड़िया बालक या जंगली बच्चे जैसे मामले) में चलने की क्षमता का अभाव, मस्तिष्क का औसत से कम विकास, भाषा क्षमता का अभाव आदि इस तथ्य का प्रमाण है कि, सामाजिक सम्पर्क के अभाव में मनुष्य की मानवीय प्रकृति का विकास असंभव है।

2. मनुष्य अपने 'स्व' या व्यक्तित्व विकास के लिए समाज पर ही निर्भर है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री

सी·एच·कूले द्वारा प्रस्तुत "आत्म दर्पण का सिद्धान्त" के अनुसार, अन्य व्यक्तियों के साथ अन्तर्क्रिया व अपने प्रति उनकी अवधारणाओं की कल्पना के क्रम में ही व्यक्ति के 'स्व' या व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

~~8. मनुष्य~~

3. मनुष्य अपने सामाजिक विरासत पर विशेष रूप से निर्भर है। उसकी क्षमताओं की विमुक्ति व परिसीमन समाज द्वारा उपलब्ध कराये गये ~~व~~ अवसरों व प्रतिबन्धों पर तो निर्भर है ही, साथ-ही उसकी मनोवृत्तियों, विश्वासों, नैतिकताओं व विचारों पर-भी निर्भर हैं जो समाज द्वारा ही निर्मित होती हैं। इस प्रकार मनुष्य के लिए, उसकी सामाजिक विरासत एक बाह्य वातावरण मात्र नहीं है अपितु उसकी आन्तरिक या मानसिक विनिर्मिति का हिस्सा है।

इस प्रकार, मनुष्य अपनी प्रकृति के किसी मौलिक संघटन के परिणामत: सामाजिक प्राणी नहीं है अपितु वह एक सामाजिक प्राणी इसलिए है क्योंकि उसकी मानवीय प्रकृति का विकास समाज में ही संभव है।